# संस्कृत भाषा के विकास में राजस्थान के ग्रन्थागारों का योगदान

**डॉ. सोमबाबू शर्मा**
राष्ट्रिय पाण्डूलिपि मिशन

**राजस्थान** की वीर प्रसविनी मरुधरा में अनेक युगपुरूष हुए हैं। जिन्होंने राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध किया है। राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत सहेजना, संभालना हमारे संस्कारों में है। राजस्थान के किले, महल, हवेलियाँ, स्थापत्य कला, चित्रकला की समृद्ध परम्परा, ग्रन्थ लेखन की परम्परा, मरुधरा की मृदा पर मिटते-सिमटते अक्षर और उन अक्षरों के संसार ने नवीनता का सृजन किया। जिस प्रकार देवता अमर हैं, उसी प्रकार संस्कृत भाषा भी अपने विशाल साहित्य भण्डार, लोकहित की भावना, नवीन शब्दनिर्माण क्षमता आदि के द्वारा अमर है।

आधुनिक विद्वानों के अनुसार संस्कृत भाषा का अखण्ड प्रवाह 5000 वर्षो से बहता चला आ रहा है। भारत में यह आर्यभाषा का सर्वाधिक महत्त्वशाली, व्यापक और संपन्न स्वरुप है। इसके माध्यम से भारत की उत्कृष्टतम मनीषा, प्रतिभा, अमूल्य चिंतन, मनन, विवेक, रचनात्मक, सर्जना और वैचारिक प्रज्ञा का अभिव्यंजन हुआ है।

आज भी सभी क्षेत्रों में इस भाषा के द्वारा ग्रंथ निर्माण की क्षीण धारा अविच्छिन्न रूप से बह रही है। आज भी यह भाषा, अत्यंत सीमित क्षेत्र में ही सही, बोली जाती है। इसका वार्तालाप भी होता है। व्याख्यान भी होते हैं। हमारे सांस्कारिक कार्यों में आज भी संस्कृत का प्रयोग होता है। यह मृत भाषा नहीं, अमर भाषा है। जन-जन की जनमानस की सुषुप्त चेतना में बसी हुई भाषा है संस्कृत।

**राजस्थान के प्राचीन एवं नवीन शास्त्र भण्डार–**

1. पोथीखाना, जयपुर
2. आमेर जैन शास्त्र भण्डार, आमेर, जयपुर
3. जिनभद्र सूरी सरस्वती भण्डार, जैसलमेर
4. पुस्तक प्रकाश महल, जोधपुर
5. सिटी पैलेस, उदयपुर
6. राज. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
7. नागौर शास्त्र भण्डार, कुचामन सिटी, जयपुर
8. संजय शर्मा संग्रहालय एवं शास्त्र भण्डार, जयपुर
9. रामचरण शर्मा संग्रहालय एवं प्राच्य शोध संस्थान, जयपुर
10. निम्बार्क पीठ, सलेमाबाद
11. राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
12. जैन विद्या संस्थान, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर
13. रैवासा धाम, सीकर
14. मथुरानाथ शर्मा ग्रन्थ भण्डार, मथुराधीश मंदिर, कोटा
15. गुरुचरण सिंह सिक्ख शोध संस्थान, कोटा
16. अकलंक शोध संस्थान, कोटा
17. बूंदी सिटी पैलेस, बूंदी
18. हिन्दी, ब्रज, संस्कृत शोध संस्थान, नागरी प्रचारिणी सभा, भरतपुर
19. गलता पीठ, जयपुर

20. राजकीय संग्रहालय, जयपुर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, अलवर, भरतपुर, चितौडगढ
21. श्री दादू आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर
22. राष्ट्रिय अरबी फारसी शोध संस्थान, टोंक
23. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
24. राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर

19 वीं सदी के अन्तिम दशक में जर्मन विद्वान् थियोडोर ऑफ्रेख्त ने संस्कृत पाण्डुलिपियों में उल्लिखित नामों एवं रचनाओं की अक्षरानुक्रम में एक पंजी (रजिस्टर) तैयार की। कालिदास पूर्व नाटककारों, शंकर पूर्व वेदान्तिक रचना, आरंभिक सांख्य रचना, भर्तृहरि से पहले की व्याकरण रचना तथा नाट्यशास्त्र, बौद्धायन एवं उपवर्ष पर टिप्पणियों से सम्बंधित पाण्डुलिपियों की खोज अभी बाकी हैं।

अजमेर स्थित ढाई दिन के झौंपडा पूर्व में विशाल संस्कृत पाण्डुलिपि कोषागार था। जिसे मुस्लिम आक्रांताओं ने आग लगा दी थी। जिसकी आग लगभग 6 माह तक जलती रही। इसमें लाखों की संख्या में पाण्डुलिपियाँ थी। इसकी दीवारों पर आज भी हरिकेलि नाटक के श्लोक दृष्ट्व्य हैं। इसी नाटक के श्लोक ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय की समाधि पर भी अंकित है। इस कोषागार को महाराज भोज से लेकर पृथ्वीराज चौहान तृतीय 'राय पिथौरा' तक ने सहेजा था। भीनमाल (जालौर) भी प्राचीन कोषागार था। भारत में लगभग 5 करोड पाण्डुलिपियाँ है। राजस्थानमें लगभग 50 लाख तक पाण्डुलिपियाँ होने का अनुमान है। यूरोपीय राष्ट्रों में उपलब्ध भारतीय पाण्डुलिपियाँ 60000 है। एशियाई एवं दक्षिण एशियाई देशों में भारतीय पाण्डुलिपियाँ 150000 है। सूची पत्र में दर्ज पाण्डुलिपियाँ 1 करोड है।

**पाण्डुलिपियों का विषयवार प्रतिशत –**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | संस्कृत | – | 67 प्रतिशत |
| 2. | अन्य भारतीय भाषाएँ | – | 25 प्रतिशत |
| 3. | अरबी/फारसी/तिब्बती | – | 8 प्रतिशत |

पं. जवाहर लाल नेहरु का वक्तव्य 'भारत एक खोज' ( Discovery of India ) में पाण्डुलिपि सम्पदा के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है –

" One of Our Major Misfortunes in that we have Lost So Much of the World's ancient literature in Greece, in India Elsewhere..... Probably an Organized Search for Old Manuscripts in Libraries of Religious Institutions , Monestreries and Private Person Would Yield rich results . That, and the critical e&amination of These Manuscripts and where considered desirable , their Publication and Translations are among the many things we have to do in India when we succeed in breaking through our shackles and can function for ourselves. Such a study is bound to throw light on many phases of Indian History and especially on the Social background behind historic events and changing ideas ."

इसी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के सन्दर्भ में युगपुरष स्वप्नदृष्टा, युवाप्रेरक स्वामी विवेकानन्द जी ने ''भविष्य का भारत'' ( Future of India ) व्याख्यान में कहा है कि – "My India is first of all to bring out of the gems of spirituality that are stored up in our books ( Manuscripts ) and in the possession of a few only. Hidden as it were, in monasteries and in forests to bring them out to bring the knowledge out of them, not only from the hands where it is hidden, but from the still more inaccessible chest, the language in which it is preserved, the incrustation of centuries of Sanskrit words. In one word, I want to make them popular, I Want to bring out these ideas and let them be the common Property of all of every man in India, Whether he knows the Sanskrit language or not."

Cots - Page No. 290 ( Lectures from Colombo to Almora ), The complete works of vevekananda, Vol . - x Mayavati Memorial Edition , Calcutta )

हस्तलिखित ग्रन्थ ( पांडुलिपियाँ ) भारत को विरासत में मिली अपार मूल्यवान सम्पदा है। ये पांडुलिपियाँ हजारों कि संख्या में मन्दिरों, ग्रन्थागारो, पुस्तकालयों यंहा तक कि निजी घरों में भी रखी हुई है।

रुथ बी. बोर्डिन एवं राबर्ट एम. वार्मर ने अपनी पुस्तक 'द मोर्डेन मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी' में बताया है कि मैन्युस्क्रिप्ट या पांडुलिपि पुस्तकालय का अस्तित्व ही अनुसंधाता और विद्यार्थी की सेवा करने के लिए होता है।

( "A Manuscript Library e&ists to serve the scholar and the student" )

तीन प्रकार के संग्रहालय बताये है –

1. रक्षागार
2. म्यूजियम – अजायबघर का अद्भुतालय
3. हस्तलेखागार या पाण्डुलिप्यागार

रक्षागार के सम्बन्ध में इनका कथन है–

"One of the most important types of manuscript repository is the official archive which preserves the records of federal state , or local government bodies."

रक्षागार सरकारी कागज पत्रों का भण्डार होता है – भारत में राष्ट्रीय अभिलेखागार ( National Archives ) ऐसा ही संग्रहालय है। राजस्थान में बीकानेर में राज. राज्य अभिलेखागार ( raj . state Archives ) में राज्य के समस्त कागज पत्र संग्रहित है। राजस्थान में पाण्डुलिपि प्राप्ति के स्त्रोत राजस्थान प्राचीनकाल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। राजा महाराजा स्वयं साहित्यिक थे, तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्य में होने वाले कवियों एवं विद्वानों को आश्रय दिया और पदवियाँ प्रदान की, अपनी राजधानियों में हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहालय स्थापित किये। आज भी राजस्थान में कितने ही स्थानों पर विशेषत: जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते है। जिस प्रकार जयपुर का पोथीखाना प्राचीन पाण्डुलिपियों के संग्रह के लिए विश्वविख्यात है उसी प्रकार नागौर, जैसलमेर एवं अलवर तथा उदयपुर के ग्रन्थागार सर्वोपरि है। इनमे जैन ग्रन्थ भण्डार प्रमुख है ये भण्डार निज मन्दिरों में है। इन भण्डारों में संस्कृत साहित्य की विपुल पांडुलिपियाँ विद्यमान है।

दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि भण्डार निम्न है –

1. बधीचन्दजी मन्दिर का पाण्डुलिपि भण्डार, जयपुर। यंहा 1278 पाण्डुलिपियाँ हैं। संस्कृत साहित्य, जैन साहित्य का विशाल भण्डार है।
2. ठोलियों का मन्दिर, जयपुर – 3500 पाण्डुलिपियाँ है।

**राजस्थान के आधुनिक दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि भण्डार –**

| क्र.सं. | पाण्डुलिपि भण्डार का नाम | पाण्डुलिपियों की संख्या | विषय |
|---|---|---|---|
| 1 | पाटोदी पाण्डुलिपि भण्डार, जयपुर | 2565 | सभी |
| 2 | संघी जी पाण्डुलिपि भण्डार, जयपुर | 976 | सभी |
| 3 | छोटे दीवान जी पाण्डुलिपि भण्डार, जयपुर | 830 | सभी |
| 4 | गोधो का पाण्डुलिपि भण्डार, जयपुर | 718 | सभी |
| 5 | पार्श्वनाथ पाण्डुलिपि भण्डार, जयपुर | 558 | सभी |
| 6 | आमेर शास्त्र भण्डार, जयपुर (जैन विद्या संस्थान) | 6000 | सभी |
| 7 | लश्कर मन्दिर पाण्डुलिपि भण्डार, अजमेर | 828 | सभी |
| 8 | पाण्डुलिपि भण्डार भट्टारकीय मन्दिर, अजमेर | 2015 | सभी |
| 9 | पाण्डुलिपि भण्डार अग्रवाल जैन मन्दिर, उदयपुर | 388 | सभी |
| 10 | संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर | 524 | सभी |
| 11 | तेरापंथी मन्दिर, बसवा, दौसा | 1500 (आगरा) | सभी |
| 12 | पाण्डुलिपि भण्डार, डुंगरपुर | 553 | सभी |
| 13 | भट्टारकीय पाण्डुलिपि भण्डार, नागौर (A Descriptive catalog of Nagour.) | 14000 (P.C. Jain) | सभी |
| 14 | पाण्डुलिपि भण्डार, ऋषभदेव (केसरियानाथ जी) | 1100 | सभी |
| 15 | बधीचन्द मन्दिर शास्त्र भण्डार, जयपुर | 1278 | सभी |
| 16 | ठोलियों का मन्दिर पाण्डुलिपि भण्डार, जयपुर | 3500 | सभी |

**राजस्थान के प्रमुख श्वेताम्बर जैन पाण्डुलिपि भण्डार –**

| क्र. सं. | पाण्डुलिपि भण्डार का नाम | पाण्डुलिपियों की संख्या | विषय |
|---|---|---|---|
| 1 | जिनभद्र वृहद् पाण्डुलिपि भण्डार, जैसलमेर (10 वीं शताब्दी से 20 वीं शताब्दी) | 804 ताडपत्र पर हैं। | सभी |
| 2 | पाण्डुलिपि भण्डार, बीकानेर, जूनागढ | 85000 | सभी |
| 3 | अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर | 15000, संस्कृत | सभी |
| 4 | अभय जैन ग्रन्थालय | 10000 | सभी |
| 5 | प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, बीकानेर | 22000 | सभी |
| 6 | यतिऋद्धिकरण का पाण्डुलिपि भण्डार, चुरू | 3800 | सभी |
| 7 | तेरापंथी सभा, सरदार शहर, चुरू | 1500 | सभी |
| 8 | पाण्डुलिपि भण्डार लालभवन, जयपुर | 3710 | सभी |
| 9 | पाण्डुलिपि भण्डार भरतपुर | 800 | सभी |
| 10 | पाण्डुलिपि भण्डार, बयाना (भरतपुर) | 2500 | सभी |
| 11 | पाण्डुलिपि भण्डार, डीग, कुम्हेर (भरतपुर) | 1500 | सभी |
| 12 | पाण्डुलिपि भण्डार, जोधपुर | 1100 | सभी |
| 13 | केसरियानाथ जी ज्ञान भण्डार | | |
| 14 | पाण्डुलिपि भण्डार, उदयपुर<br>मन्दिर समूह<br>(श्री गौडी उपासरा) | <br>4950<br>625 | सभी |
| 15 | पाण्डुलिपि भण्डार, कोटा–बूंदी | 1177 | सभी |
| | जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ, नागौर | 6000 | सभी |

**राजस्थान के प्रमुख निजी / राजकीय पाण्डुलिपि भण्डार –**

| क्र. सं. | पाण्डुलिपि भण्डार का नाम | पाण्डुलिपियों की संख्या | विषय |
|---|---|---|---|
| 1 | राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (आर्षरामायण, गीत–गोविन्द, संक्षिप्त भागवत, पृथ्वीराजरासो की प्रामाणिक टीका) | 1011 चित्रित पाण्डुलिपियाँ 119883 | सभी |
| 2 | स्क्रष्टस् संग्रहालय, जयपुर | 22000 | सभी |
| 3 | संजय शर्मा संग्रहालय, जयपुर | 1 लाख 50 हजार | सभी |
| 4 | राजस्थानी शोध संस्थान | | सभी |
| 5 | चौपासनी, जोधपुर | 17000 | सभी |
| 6 | मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान, टोंक | अज्ञात | सभी |
| 7 | रैवासाधाम, सीकर | 650 | सभी |
| 8 | श्री दादू आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर | 350 | सभी |
| 9 | राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर | 4800 | सभी |
| 10 | राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर | 14000 | सभी |

यंहा पर सभी पाण्डुलिपि भण्डारों का वर्णन करना संभव नहीं है। क्योंकि राजस्थान में साहित्य निर्माण की धारा अविरल रुप से प्रवाहित होती रही है। संस्कृत भाषा और साहित्य के उन्नयन में राजस्थान के ग्रन्थागारों की भूमिका सदैव अग्रणी रही है।

संस्कृत भाषा के साथ-साथ यंहा के निवासियों ने प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी तथा गुजराती और क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में सर्वाधिक योगदान दिया। श्री गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा, कर्नल जेम्स टॉड, टेसटरी, डॉ. रघुवीर, राहुल सांस्कृत्यायन, पं. मधुसूदन ओझा, मुनि पुण्यविजय जी, दिगम्बर साधुओं, भट्टारकों, डॉ. सत्येन्द्र, महामहोपाध्याय विनयसागर, डॉ. कस्तूर चन्द कासलीवाल, अनूपचन्द न्यायतीर्थ तथा वर्तमान में अनेक विश्रुत विद्वान संस्कृत पाण्डुलिपियों के संरक्षण, परिरक्षण में अहर्निश सेवा दे रहे हैं।

कहा जाता है कि ह्वेनसांग भारतीय पाण्डुलिपियों का एक विशाल संग्रह लेकर वापस चीन पहुँचा। उसमें तर्कशास्त्र, तत्वमीमांसा, आयुर्विज्ञान, प्रणय लोक कथा और रहस्यवाद सदृश एक-दूसरे से एकदम भिन्न पाण्डुलिपियाँ थी। बौद्ध मठ, एवं नालन्दा, तक्षशिला एवं विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय पाण्डुलिपियों के प्रसिद्ध कोषागार थे।

**निष्कर्षत** - कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा के विकास में ग्रन्थागारों की महत्ता सर्वविदित है। अतः ग्रन्थागारों में छिपी हुई हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को शोध, प्रकाशन और विभिन्न प्रविधियों के द्वारा उनका उन्नयन करना परम पुनीत कर्तव्य हैं। अतः कहा है - 'ग्रन्थ प्रभु के विग्रह रूप हैं।' इनकी संरक्षा सुरक्षा के लिए यही वेद सम्मत कथन है - 'विज्ञानमुपास्य'। 'अतीत की रक्षा भविष्य की सुरक्षा' के साथ ही मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।